नियमित विद्यालय में विशेष कक्षा की व्यवस्था

राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान
मनोविकास नगर, सिकंदराबाद - 500 009.
✆ : 7751741 - 745

नियमित विद्यालय में विशेष कक्षा की व्यवस्था

जयन्ती नारायण

विशेष शिक्षा में सहायक प्रोफेसर

डी.के. मेनन

निदेशक

अनुवादक : केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो नई दिल्ली

राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान

मनोविकास नगर, सिकंदराबाद - 500 009.

✆ : 7751741 - 745

नियमित विद्यालय में विशेष कक्षा की व्यवस्था

रा.मा.वि.सं., सिकन्दराबाद द्वारा

कॉपीराइट : © 1989
सर्वाधिकार सुरक्षित

चित्र : **श्री के. नागेश्वर राव**

मुद्रक : **श्री रमणा प्रॉसेस**
सरोजिनी देवी रोड, सिकन्दराबाद

विषय - सूची

पृष्ठ

परिचय 1

एकीकृत शिक्षा के लाभ (समन्वित शिक्षा के लाभ) 1

शिक्षा की राष्ट्रीय नीति 2

विशेष कक्षा की व्यवस्था 3

नियमित विद्यालय में विशेष कक्षा के लिए सरकारी सहायता 4

एक विशेष कक्षा के लिए बजटीय जरूरतें 6

प्रधानाचार्य और नियमित कक्षा अध्यापकों को विशेष कक्षा के अनुकूल बनाना 6

आधारिक संरचना 7

फर्नीचर 9

उपस्कर 9

कक्षा में विद्यार्थियों की संख्या 9

कर्मचारी 10

दाखिला 10

कार्य के घंटे 10

पाठ्यक्रम और कार्यक्रम 13

रिकार्ड रखना 13

अभिभावक के साथ बैठक 14

निष्कर्ष 16

परिशिष्ट - 1 : पाठ्यक्रम रूप रेखा 16

परिशिष्ट - 2 : आई इ पी/आई टी पी नियमपुस्तक और फार्म 23

परिशिष्ट - 3 : नमूना भरा हुआ आई टी पी 33

परिचय

पुस्तिका का उद्देश्य

विकलांग बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के महत्व को स्वीकार करने के साथ ही विश्व में विभिन्न शैक्षणिक सुविधाओं पर प्रयोग किए जा रहे हैं। आज विकलांग बच्चों की शिक्षा के लिए जो पद्धति अपनाई जा रही है वह है एकीकृत शिक्षा (समन्वित शिक्षा), जिससे, यह आशा की गई है कि बच्चा सामान्य व्यक्ति बन सकेगा। इस आंदोलन के पीछे जो दर्शन है वह यह है कि विकलांग बच्चों को कम-से-कम सीमित वातावरण में शिक्षा उपलब्ध करवाने से समुदाय के एकीकरण के लिए विशेषीकृत प्रावधानों की कम-से-कम आवश्यकता पडेगी। एक तरफ तो विकलांग व्यक्ति समुदाय की मांगों पर पूरा उतरने में समर्थ हो सकेंगे तो दूसरी तरफ सामान्य व्यक्ति अपने विकलांग साथी को ठीक प्रकार से समझने के कारण उन्हें स्वीकार करना सीखेंगे जिससे कि स्वतः स्फूर्त एकीकरण होगा।

इस पुस्तिका में नियमित विद्यालय में विशेष कक्षा स्थापित करने के बारे में जानकारी देने और उसके लिए विभिन्न चरणों को बताने का प्रयास किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर विशेष रूप से अक्षम बच्चों के लिए एकीकृत शिक्षा परियोजना के संदर्भ में विस्तृत जानकारी इस पुस्तिका में दी गई है जो कि उन व्यक्तियों की मदद कर सकती है जो कि नियमित विद्यालयों में विशेष कक्षा बनाना और चलाना चाहते हैं। इस पुस्तिका में विशेष कक्षा की व्यवस्था के संबंध में जो विवरण दिए हैं वे हैं : कक्षा में विद्यार्थियों की संख्या, दाखिल किए जाने वाले मानसिक विकलांग बच्चों के अध्यापकों के साथ समन्वय, पाठ्यक्रम अनुकूलन (स्मांतर) कार्यक्रम बनाना और रिकार्ड तैयार करना। इस पुस्तिका के प्रयोक्ताओं से फीडबैक का स्वागत है क्योंकि इससे पुस्तिका के भावी संस्करणों में सुधार लाने में सहायता मिलेगी।

एकीकृत शिक्षा के लाभ (फायदे)

- सामान्य बच्चों को इससे मानसिक विकलांग बच्चों के बारे में जानकारी मिलती है और उन्हें अपने साथ मिलाने की भावना आती है।
- ये मानसिक विकलांग बच्चों में सामाजिक सामर्थ्य का विकास करती है।
- यह खर्च बचाने वाली है क्योंकि एकीकृत शिक्षा के लिए नियमित विद्यालय का उपयोग किया जा सकता है और इसके लिए किसी विशेष संस्थापना की आवश्यकता नहीं है।
- यदि प्रत्येक प्राथमिक विद्यालय विशेष कक्षा चलाता है तो अपेक्षाकृत अधिक मानसिक विकलांग बच्चों को शिक्षित किया जा सकता है।

शिक्षा की राष्ट्रीय नीति

विकलांगों के लिए शिक्षा की राष्ट्रीय नीति में प्रावधान

1. जहां कहीं यह संभव होगा प्रेरक अक्षमताओं और अन्य हल्की अक्षमताओं वाले बच्चों की शिक्षा सामान्य बच्चों के साथ ही होगी।

2. गंभीर रूप से विकलांग बच्चों के लिए जहाँ तक संभव होगा जिला मुख्यालय पर होस्टल की सुविधा के साथ विशेष स्कूलों की व्यवस्था की जाएगी।

3. अपंगों को व्यावसायिक प्रशिक्षण देने के लिए समुचित व्यवस्था की जाएगी।

4. शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रमो का पुनरभिविन्यासन विशेष रूप से प्राथमिक कक्षाओं के अध्यापकों के लिए करना होगा जिससे कि वे विकलांग बच्चों की विशेष समस्याओं से निपट सकें।

5. हर संभव तरीके से अपंगों की शिक्षा के लिए स्वैच्छिक प्रयास को प्रोत्साहित किया जाएगा।

* मानव संसाधन विकास मंत्रालय, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986

यह योजना मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा कार्यान्वित की जाती है और केंद्र सरकार योजना का कार्यान्वयन करने में राज्य सरकारों और संघ राज्य क्षेत्रों का सहयोग करती है। चूंकि यह योजना विद्यालयों द्वारा कार्यान्वित की जाएगी इसलिए शिक्षा विभाग को कार्यान्वयन करने में स्वैच्छिक संगठनों से भी सहायता लेने की अनुमति है। इस योजना की और अधिक जानकारी अध्यापक शिक्षा विभाग, विशेष शिक्षा एवं विस्तार सेवा, रा.शि.अनु. और प्र.परि. (राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद) श्री अरविन्दों मार्ग, नई दिल्ली - 110 016 से संपर्क करके प्राप्त की जा सती है।

Fig. 1

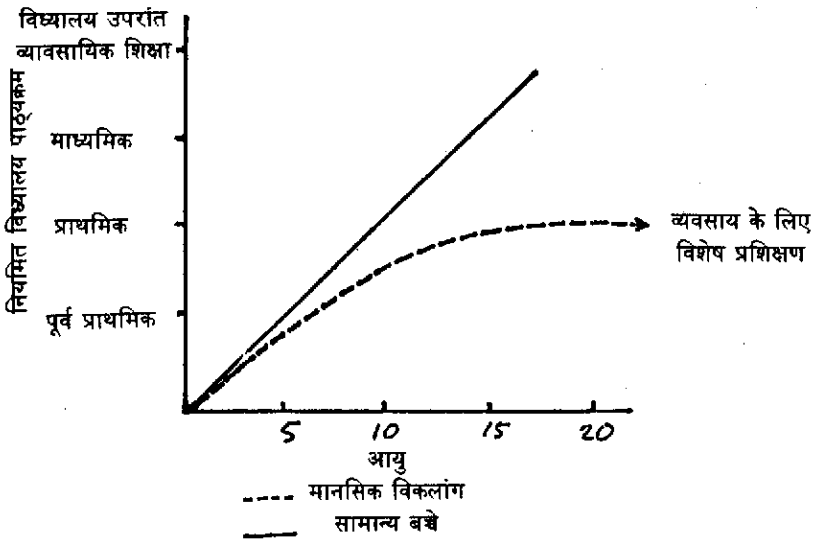

चित्र - 1

मानसिक विकलांग बच्चों की समन्वित शिक्षा पूर्व प्राथमिक और प्राथमिक स्तर पर संभव है क्योंकि इनके पाठ्यक्रम के विषय नियमित विद्यालयों के समान ही होते हैं, उनके न्यूनतम रूपांतर की आवश्यकता होती है।

विशेष कक्षाओं की व्यवस्था

विशेष कक्षा प्रत्येक प्राइमरी विद्यालय में चलाई जाने चाहिए। जब हम मानसिक विकलांग बच्चे की शिक्षा लेने की योग्यता को देखते हैं तो यह आमतौर पर कार्योन्मुख होती है और वह कक्षा IV के स्तर तक पाठ्यक्रम रूपांतर के सात सीख लेता है। इसलिए मानसिक विकलांग बच्चों को छोटी आयु में ही सामान्य बच्चों के साथ मिलकर रहने के अवसर दिए जाने चाहिए। वे अधिक सार्थक ढंग से दूसरे में मिल सकें। इससे कई मामलों में 1 से 3 तक की कक्षा में शिक्षा योग्य मानसिक विकलांग बच्चों को सामान्य बच्चों के साथ पढाया जा सकता है जैसा कि चित्र-I में देखा गया है कि पाठ्यक्रम के विषय पूर्व प्राथमिक और प्राथमिक कक्षाओं में एक जैसे होने पर भी जैसे-जैसे मानसिक विकलांग बच्चे की आयु बढती है उनका अंतर भी बढता जाता है। इसलिए विशेष आयु के मानसिक विकलांग बच्चों के लिए समुचित पाठ्यक्रम होना चाहिए। अतः प्राथमिक विद्यालयों में विशेष कक्षाएं आवश्यक रूप से चलाई जानी चाहिए।

दाखिल किए जाने वाले मानसिक विकलांग बच्चों का स्तर

ऐसी विशेष कक्षाओं के लिए 12 या 13 वर्ष से कम की आयु के शिक्षा योग्य मानसिक विकलांग बच्चे (शिक्षा.यो.मा.वि./कम मानसिक विकलांग) ही अधिक उपयुक्त हैं। हालांकि कुछ विद्यालयों ने साधारण रूप से मानसिक विकलांग बच्चों को भी दाखिल करने का प्रयोग किया है और उन्हें सभी सामाजिक क्रियाकलापों से जोडा है। माध्यमिक स्तर के मानसिक विकलांग बच्चों के लिए व्यवसायोन्मुख शिक्षा यदि संभव हो तो इसी प्रकार की विशेष कक्षा में नियमित उच्चतर विद्यालयों में दी जा सकती है।

एकीकरण का स्तर

एकीकरण की सीमा या स्तर एकीकृत किए जाने वाले बच्चों की योग्यता के अनुसार अलग-अलग होगा। शारीरिक समन्वय साधारण रूप से दिए हुए वातावरण में मानसिक विकलांग और सामान्य बच्चे को साथ रखता है, दोनों का अपना-अपना अलग कार्यक्रम है, दोनों का आपस में कोई संपर्क नहीं है। दूसरी तरफ सामाजिक एकीकरण में मानसिक विकलांग और सामान्य बच्चों का सामाजिक परिस्थितियों में विशिष्ट कार्यों के लिए परस्परिक संपर्क होगा। शैक्षणिक एकीकरण कक्षा का एकीकरण है जहां विकलांग और सामान्य दोनों बच्चे एक छत के नीचे पढाई करते हैं। इन तीनों स्तरों में से मानसिक विकलांग बच्चों के लिए सबसे उपयुक्त सामाजिक एकीकरण अर्थात् समाज में उनको मिलाया जाना है।

नियमित स्कूलों (विद्यालयों) में विशेष कक्षाओं* के लिए सरकारी सहायता

i. एक विकलांग बच्चे को संबंधित राज्य/संघ राज्य क्षेत्र में प्रचलित दरों पर निम्न प्रकार की सुविधाएं दी जाएं। यदि राज्य सरकार/सं.रा.क्षे. प्रशासन द्वारा इसी तरह के प्रोत्साहन किसी अन्य योजना के तहत नहीं दिए जाते तो उस स्थिति में निम्न लिखित दरें अपनाई जा सकती हैं :

क) रु. 400/- प्रति वर्ष पुस्तकों एवं लेखन सामग्री के लिए भत्ता

ख) वर्दी के लिए रु. 200/- प्रति वर्ष का भत्ता

ग) परिवहन भत्ता रु. 50/- प्रति माह (यदि इस योजना के तहत कोई बच्चा दाखिल किया जाता है और यदि वह स्कूल के परिसर में स्कूल के हॉस्टल में ही रहता है तो उसे कोई परिवहन प्रभार स्वीकार्य नहीं होंगे।

घ) उपस्करों की वास्तविक लागत पांच वर्षों की अवधि के लिए अधिकतम रु. 2,000/- प्रति छात्र की सीमा तक।

---

* विकलांग बच्चों के लिए एकीकृत शिक्षा की योजना (1987) रा.शि.अ.पु.परि. नई दिल्ली

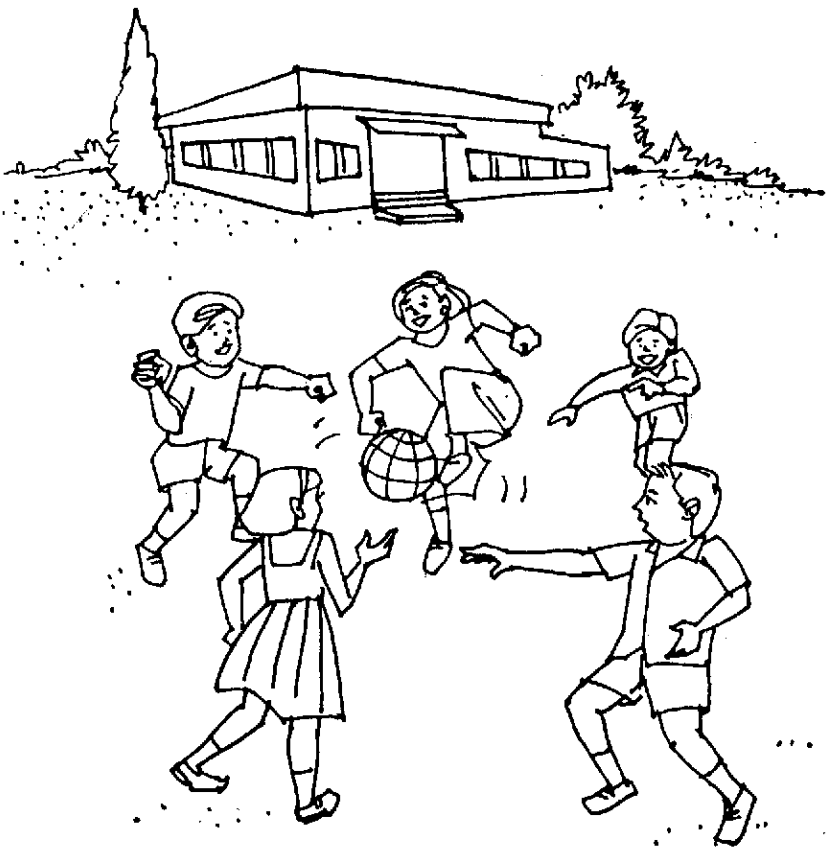

सामान्य बच्चों के साथ खेलते मानसिक रूप से विकलांग बच्चें

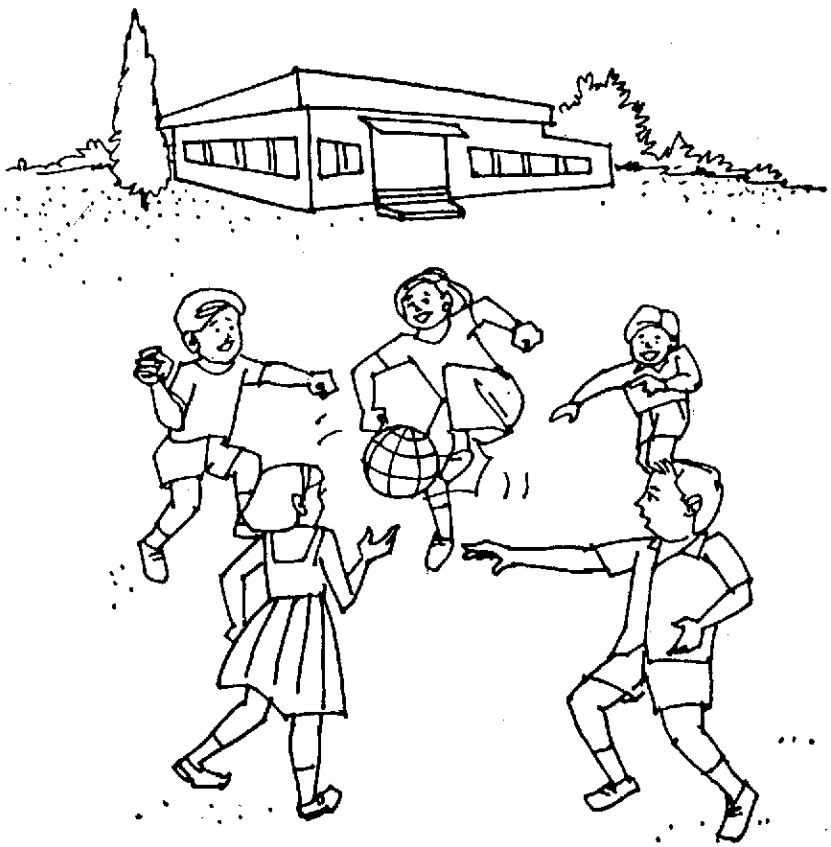

सामान्य बच्चों के साथ खेलते मानसिक रूप से विकलांग बच्चें

ii. ऐसे विकलांग बच्चों, जो कि उसी संस्थान के स्कूल हॉस्टल में रहते हैं जिसमें कि वे पढ रहे हैं, को राज्य सरकार के नियमों/योजनाओं के तहत स्वीकार्य भोजन और आवास खर्च भी दिए जाएं। जहां कहीं हॉस्टल में रहने वाले बच्चों के लिए राज्य की कोई छात्रवृत्ति योजना नहीं है और जिन विकलांग बच्चों के अविभावकों की मासिक आय रु. 3,000/- प्रति माह से कम हो वहां उन्हें 200/- प्रति माह की अधिकतम सीमा तक वास्तविक भोजन और आवास खर्च दिए जाएं।

iii. ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालय में जहां कम-से-कम 10 विकलांग बच्चे भरती हों वहां इन बच्चों के मुफ्त उपयोग लिए स्कूल रिक्शा को खरीदने के लिए पूंजी लागत और रु. 300/- प्रति माह की दर से रिक्शा चालक के खर्च के लिए इस योजना के तहत दिए जाएंगे। ऐसे मामलों में छात्रों को कोई परिवहन भत्ता नहीं दिया जाएगा।

एक विशेष कक्षा के लिए बजटीय जरूरतें :

(केवल विशेष कक्षा के लिए)

कक्षा के भीतर के उपस्कर एवं फर्नीचर रु. 5,000/- पी.आई.ई.डी. में विशेष अध्यापक के लिए प्रस्तावित वेतन : नियमित अध्यापकों समान वेतन मान जमा शहरी क्षेत्रों के लिए रु. 150/- प्रति माह और ग्रामीण क्षेत्रों के लिए रु. 200/- प्रतिमाह भत्ते।

परिवहन, कक्षा के बाहर के उपस्कर और इसी प्रकार की अन्य सुविधाओं का सामान्य बच्चों के साथ उपयोग किया जा सकता है।

प्रधानाचार्य और नियमित कक्षा अध्यापकों को विशेष कक्षा के अनुकूल बनाना

प्राध्यापक, प्रशासकों और सामान्य बच्चों के अध्यापकों को विशेष कक्षाएं आरंभ करने से पूर्व विशेष कक्षा के अनुकूल बनाना जरूरी है। अपने समय मे से कुछ भाग सामान्य बच्चें मानसिक विकलांग बच्चों के साथ बिताएंगे, अतः यह जरूरी है कि वे यह जाने कि मानसिक (मंदता) विकलांगता क्या है, मानसिक विकलांग बच्चों के प्रकार, आवश्यकताएं, सम्भाव्यताएं और अभाव कमियां क्या हैं। इसलिए 3 दिन का एक अनुकूलन कार्यक्रम आयोजित किया जाना चाहिए। कार्यक्रम का विषय विकलांग बच्चों के लक्षणों, मनोभावों, लोगों में व्याप्त धारणाओं, विद्यालय के प्राधिकारियों और नियमित विद्यालय के अध्यापकों की भूमिका और उनके द्वारा सफल एकीकरण के संभव सुझावों पर केंद्रित होना चाहिए। कार्यक्रम को बढावा देने के लिए दृश्य श्रव्य साधनों की सहायता लेना उपयुक्त है। श्रोताओं को यदि कोई संदेह हो तो उसको दूर करने के लिए, विचार विमर्श करने के लिए प्रश्नोत्तर सत्र के लिए पर्याप्त

समय दिया जाना चाहिए। कार्यक्रम की सफलता विद्यालय के कर्मचारियों के सहयोग पर काफी हद तक निर्भर करती है।

नियमित विद्यालय में विद्यार्थियों का अनुकूलन

अपने स्कूल परिसर में मानसिक विकलांग बच्चों को स्वीकार करने के लिए, छोटी आयु में ही बच्चों के मनोभावों को डालना बहुत आवश्यक है। भाषणों, कहानियों, फिल्मों, नाटकों और कटपुतली प्रदर्शनों के माध्यम से सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए अनुकूलन किया जाना चाहिए। कई ऐसे मामले देखने में आए हैं कि कई सामान्य बच्चों ने जिनके विद्यालय में मानसिक विकलांग बच्चे पढते हैं, मानसिक विकलांगता के बारे में उनके माता-पिता की भी गलत धारणाओं को दूर किया है। इसलिए विशेष कक्षा आरंभ करने से पूर्व सामान्य बच्चों को इसके लिए तैयार करना जरूरी है। जब कभी समय सारणी में मानसिक विकलांग बच्चों के साथ सामान्य बच्चों के विशिष्ट क्रियाकलाप करवाए जाने हों तो अध्यापकों को इनको आरंभ करवाने से पूर्व यह सुनिशिचत कर लेना चाहिए कि सभी सामान्य बच्चों ने इस संबंध में अपनी भूमिका को समझ लिया है। सामान्य बच्चों में किसी भी आशंका या अनिच्छा को उनके साथ विचार विमर्श करके दूर करना चाहिए। यदि सामान्य बच्चे अपने मानसिक विकलांग साथियों को स्वीकार करने का व्यवहार दर्शाते हैं तो उन्हें पुरस्कृत और प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

आधारिक संरचना :

विद्यालय के मुख्य भवन में विशेष कक्षा नियमित कक्षाओं के किसी भी तरफ किन्तु बीचों-बीच होनी चाहिए जिससे कि उन्हें अवकाश के समय में अन्य बच्चों के साथ रहने के अधिक अवसर मिल सके। कक्षा की लंबाई चौडाई अन्य कक्षाओं की तरह 16 x 12 होनी चाहिए कक्षाओं में दरवाजे की सीढियों जैसी स्थापत्य रुकावटें नहीं होनी चाहिए जिससे कि दुहरी / बहु विकलांगता वाले बच्चे आराम से आ जा सकें। कक्षा में प्राथमिक उपचार किट और दवाइयों को रखने के लिए लॉकर की सुविधा होनी चाहिए जिससे कि किसी भी दुर्घटना की स्थित में इनका तत्काल प्रयोग किया जा सके।

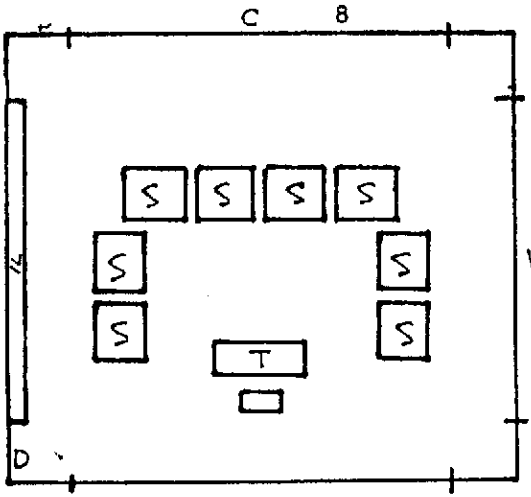

BB

वैयक्तिक शिक्षा

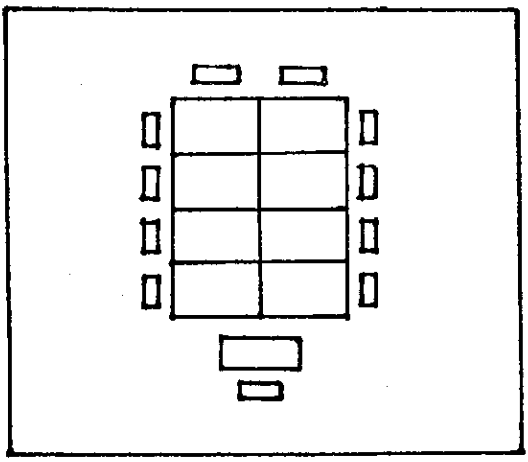

वही कक्षा + फर्नीचर - समूह शिक्षा के लिए व्यवस्थित विशेष कक्षा।

चत्र 2 - फर्नीचर व्यवस्था

फर्नीचर :

नियमित कक्षा की तरह अलग-अलग डेस्क दिए जाएं जिन्हें सामूहिक क्रियाकलापों के लिए भी अलग-अलग ढंग से लगाया जा सके। चूंकि बच्चों को अलग-अलग अनुदेश दिए जाने होते हैं इसलिए नियमित कक्षा की तरह दो या तीन सीट वाले डेस्क की जगह एक कुर्सी और मेज वाली डेस्क अधिक उपयुक्त होगी। आदर्श फर्नीचर और उसकी व्यवस्था चित्र-2 में दी गई है।

उपस्कर :

बाह्य उपस्कर :

बाह्य उपस्कर वही हो सकते हैं जो कि गैर-विकलांग सामान्य बच्चे उपयोग में लाते हैं क्योंकि मानसिक विकलांग बच्चों को अन्य बच्चों के साथ खेलना होता है। इस बात का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए कि इनके टूटे किनारे, निकली कीलों या झूलों की टूटी चेनों आदि के कारण कोई दुर्घटना न हो।

जहाँ कहीं सम्भव हो बागवानी के लिए सुविधाएं भी दी जानी चाहिए जो कि भविष्य के लिए व्यावसायिक प्राशिक्षण के लिए प्रत्याशित लक्ष्य हो सकता है।

कक्षा के अंदर के उपस्कर :

कक्षा के अंदर के उपस्कर पाठ्यक्रम के विषयों पर आधारित होंगे। मानसिक विकलांग बच्चों को शिक्षा देने का एक मात्र लक्ष्य उन्हें अपने व्यस्क जीवन में आत्मनिर्भर बनाना है। इसलिए कार्यक्रम वृत्तिमूलक समुदाय-संदर्भित सामान्य वातावरण में विशिष्ट अनुदेश देने वाला और आयु के उपयुक्त होना चाहिए। इन आवश्यक्ताओं को पूरा करने के लिए विभिन्न ग्रेड स्तर की पुस्तकें, दृश्य-श्रव्य साधन माडलों के रूप में, चित्र, स्लाइडें, फिल्में यदि संभव हो तो प्रेरण समन्वय प्रशिक्षण की सामग्री कक्षा में उपलब्ध होनी चाहिए ताकि आवश्यक पडने पर अध्यापक उसका उपयोग कर सकें। इस पुस्तिका में अन्य स्थान पर समुचित उपस्करों की सूची, पाठ्यक्रम की विषय सूची के साथ दी गई है।

कक्षा में विद्यार्थियों की संख्या :

पी आई ई डी के योजना के तहत विशेष शिक्षा अध्यापकों के लिए अध्यापक शिष्य के 1:8 के अनुपात की सिफारिश की है। यदि विद्यालय में पर्याप्त संसाधन हों तो प्रत्येक विद्यालय में 1-2 ऐसी कक्षाएं हो सकती हैं।

कर्मचारी :

प्रत्येक विशेष कक्षा में अन्य अध्यापकों के साथ समन्वय करने के लिए एक योग्यता प्राप्त विशेष शिक्षिका होनी चाहिए। उस अध्यापकों से जिनकी कक्षाओं के दौरान उनके पास सामान्य बच्चों के साथ ही साथ मानसिक रूप से विकलांग बच्चे आते हैं, से निकट सहयोग से कार्य करना चाहिए। विशेष अध्यापिका की, मानसिक रूप से विकलांग बच्चों को पढाने के अतिरिक्त स्कूल में, कार्यरत अन्य कर्मचारियों के साथ काम करने की भी जिम्मेदारी होगी। दाखिल किए गए मानसिक विकलांग बच्चों के स्तर के आधार पर अलग से आया का इंतजाम किया जाए। यदि केवल ई.एम.आर. बच्चे दाखिल किए जाते हैं तो आया रखना जरूरी नहीं होगा।

***वेतन मान :**

विशेष अध्यापिकाओं को वही वेतनमान दिए जाएंगे जो कि राज्य/संघ राज्य क्षेत्रों में उसी श्रेणी के अध्यापकों को दिए जाते हैं। इन अध्यापिकाओं की विशेष ड्यूटी को देखते हुए इन्हें शहरी क्षेत्रों में रु. 150/- प्रति माह और ग्रामीण क्षेत्रों में रु. 200/- प्रति माह विशेष वेतन दिया जाएगा। राज्य शिक्षा विभाग इस उद्देश्य के लिए ऐसे अध्यापकों की भर्ती सामान्य भर्ती प्रक्रियाओं के अनुसार कर सकता है।

दाखिला :

नियमित विद्यालय की तरह साल में एक बार दाखिला किया जाना चाहिए। नियमित कक्षा के अध्यापकों द्वारा छांटे गए बच्चों को प्राथमिकता दी जाएगी। विशेष शिक्षक, चिकित्सक, मनोवैज्ञानिक और प्रधानाचार्य का दल बच्चे के दाखिले के बारे में निर्णय लेगा। जहां कहीं जरूरी हो वहां वाक्‌विकृति विज्ञानी और शारीरिक व्यावसायिक चिकित्सक से परामर्श लिया जाना चाहिए। विशेषज्ञों के दल को विशेष कक्षा की कम-से-कम दो बार बैठक करनी चाहिए और प्रगति की समीक्षा करनी चाहिए।

कार्य के घंटे :

कार्य के घंटे नियमित विद्यालय के कार्य के घंटों के बराबर होने चाहिए, एकीकरण के लिए समय सारणी बनाई जानी चाहिए। नमूना समय सारणी चित्र 3 में देखा जा सकता है।

---

* विकलांग बच्चों के लिए एकीकृत शिक्षा योजना (1987) एन.सी.इ.आर.टी., नई दिल्ली

चित्र - 3

समय सारणी - विशेष कक्षा

	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	बृहस्पतिवार	शुक्रवार
*प्रातः 9-00 - 9-15	<———— प्रार्थना उद्‌घोषणाएं ————>				
प्रातः 9-15 - 10-00	भाषा	अंकगणित	सामाजिक अध्ययन	बाहरी सामान्य खेल	वातावरण अध्ययन
प्रातः 10-00 - 10-45	अंकगणित	कहानी	धन	भाषा	अंकगणित
*प्रातः 10-45 - 11-00	<———— विश्राम (आधी छुट्टी) ————>				
प्रातः 11-00 - 11-45	वातावरण अध्ययन	सामाजिक अध्ययन	भाषा	अंकगणित	भाषा
प्रातः 11-45 - दोपहर 12-15	संगीत	भाषा	चित्रकारी	वातावरण	सामाजिक
दोपहर 12-15 - 1-00	सामाजिक अध्ययन	धन	वातावरण अध्ययन	समय	कला एवं दस्तकारी
*दोपहर 1-00 - 2-00	<———— भोजन अवकाश ————>				
*दोपहर 2-00 - 2-30	समय	वातावरण अध्ययन	अंकगणित	सामाजिक अध्ययन	धन
दोपहर 2-30 - 3-30	<———— कौशल बागवानी, लकडी का काम, चित्रकारी, पैकिंग आदि ————>				

*सामान्य बच्चों के साथ एकीकृत

चित्र

कक्षा के साथी द्वारा पढाना-सामान्य बच्चा मानसिक रूप से विकलांग बच्चे की पढाई में सहायता कर रहा है।

पाठ्यक्रम और कार्यक्रम बनाना

* प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा ढाँचे के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम (1988) में सुझाव दिया गया है कि पाठ्यक्रम और उसके कार्यविवरणों में हमारे देश में विद्यालय जाने वाले बच्चों की जोकि जनसंख्या का एक बडा हिस्सा है विशेष आवश्यकताओं को ध्यान में रखना होगा। वंचितों, लाभ न प्राप्त कर सकने वालों और अक्षम बच्चों की क्षतिपूरक और सुधारात्मक उपायों को विकसित करने के लिए पाठ्यक्रम में नया वर्गीकरण करना होगा जिससे कि ये बच्चे यथाशीघ्र अन्य बच्चों के समान स्तर पर आ सकें।

मानसिक विकलांग बच्चे को कक्षा में जो पढाया गया है उसका सीधा सामान्यीकरण नहीं होता इसलिए ऐसे बच्चे को स्वभाविक वातावरण में पढाना जरूरी होता है अतः सिर्फ उसे कोई बात बता कर ही सिखाया जा सकता है। यह जरूरी है कि पाठ्यक्रम इस प्रकार तैयार किया जाना चाहिए कि उसे वही सिखाया जाए जो कि उसके दिन प्रतिदिन के जीवन के लिए उपयोगी हो और उसकी आयु के उपयुक्त हो। यह उचित अनुकूल व्यवहार बनाने में मदद करता है। परिशिष्ट 1 में एकीकृत ढांचे में मानसिक रूप से विकलांग बच्चों के लिए ऐसे पाठ्यक्रम की संक्षिप्त रूप-रेखा दी गई है।

रिकार्ड रखना

प्रत्येक अध्यापक बच्चे के कौशल स्तर के प्रारंभिक मूल्यांकन, लक्ष्य निर्धारित करने और बच्चे के लिए व्यक्तिगत प्रशिक्षण कार्यक्रम लिखने के लिए उत्तरदायी होगा, इन सबकी प्रत्येक 3 महिनों में समीक्षा की जानी चाहिए 1 विभिन्न रिकार्ड जो बनाए जाने हैं वे निम्नलिखित हैं, (क) दाखिला रजिस्टर जिसमें दाखिल किए गए बच्चे, दाखिले के लिए गए बच्चे, दाखिले के लिए अस्वीकृत बच्चे, प्रतीक्षा सूची में बच्चे सम्मिलित हों (ख) उपस्थित रजिस्टर, (ग) स्टॉफ रजिस्टर (घ) अभिवृद्धि रजिस्टर (ङ) आगन्तुक डायरी।

जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि प्रत्येक बच्चे के लिए व्यक्तिगत शिक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम विकसित किया जाए जिको योजनाबद्ध तरीके से कार्यान्वित किया जाए और उनकी प्रगति का मूल्यांकन आवधिक समीक्षा फार्म का उपयोग करके किया जाए।

परिशिष्ट 2 में व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम/व्यक्तिगत प्रशिक्षण कार्यक्रम फार्म और नियमपुस्तक दी गई है। ये पुस्तिका व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम फार्म 2 के विकास पर रा.मा.वि.सं. में 1986 में हुई राष्ट्रीय विचारगोष्ठि का एक परिणाम है । विभिन्न क्षेत्रों के

---

* प्रारंभिक और माध्यमिक शिक्षा ढांचा (1988) के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम, रा.शि.अ.प्र. परिषद, नई दिल्ली।

व्यावसायिकों ने इस विचार गोष्ठी में भाग लिया जिनमें विशेष शिक्षा वाक् विकृति विज्ञान, श्रवण विज्ञान मनोविज्ञान, शारीरिक व्यावसायिक चिकित्सा और आयुर्विज्ञानी सम्मिलित थे। देश में विद्यमान व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम फार्मों पर विचार गोष्ठी में चर्चा की गई और नया फार्म इसको भरने की नियमपुस्तक के साथ विकसित किया गया। भाग लेने वाले संगठनों ने 6 माह के लिए नए फार्मेट का प्रयोग किया और फीडबैक दिया। इस फीडबैक के आधार पर आगे के परिवर्तन किए गए और संशोधन फार्मेट उनकी नियमपुस्तक के साथ इस पुस्तिका में संलग्न हैं। यह फार्म वर्तमान में देश के बहुत से विशेष विद्यालयों में सफलतापूर्वक प्रयोग में लाया जा रहा है। भरे हुए व्य.शि.का./व्य.प्र.का. नमूना फार्म की एक प्रति परिशिष्ट 3 में दी गई है।

अविभावकों के साथ बैठक :

अध्यापक को समय-समय पर अभिभावक के साथ बैठकें आयोजित करनी चाहिए। यह बहुत अच्छा होगा कि तीन महीने में एक बार यह बैठक हो लेकिन वर्ष में एक बार अविभावक बैठक अवश्य आयोजित की जानी चाहिए। इस के अतिरिक्त अविभावकों के साथ अलग से आवश्यकता होने पर बैठक करनी चाहिए। विद्यार्थी डायरी रखना भी अभीष्ट होगा जिसके माध्यम से अविभावक और अध्यापक के मध्य संपर्क बना रह सके।

निष्कर्ष :

जैसे कि देखा जा सकता है, सामान्य बच्चों के विद्यालय में विशेष कक्षा स्थापित करना अपेक्षाकृत किफायती है, स्थापित करना सरल है, इससे मानसिक विकलांग बच्चे कम सीमित वातावरण में सामान्य बच्चों के साथ शिक्षा पा सकते है जिससे सामान्य और मानसिक रूप से विकलांग बच्चे एक दूसरे को प्रारंभिक जीवन से ही जान पाते हैं। यह स्वतः एकीकरण का मार्ग प्रशस्त करता है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक गांव में प्राथमिक विद्यालय है जहां विशेष कक्षा आरंभ करना विद्यालय खोलने की अपेक्षा आसान है। यदि इस दिशा में प्रयास किए जाते हैं तो सबके लिए प्राथमिक शिक्षा का लक्ष्य प्राप्त करना निकट भविष्य में बहुत कठिन नहीं होगा।

आभारोक्ति :

श्री पी.ए. शिवसुब्रामनियन, उप निदेशक (प्रशासन) द्वारा इस पुस्तक के मुद्रण के लिए दी गई प्रशासनिक सहायता और किए गए कार्य के लिए हम उनके बहुत आभारी हैं।

हम श्री ए. वेंकटेश्वर राव की इस पुस्तिका के लिए लिपिकीय सहायता और श्री के. नागेश्वर राव के कला कार्य के लिए धन्यवाद करते हैं।

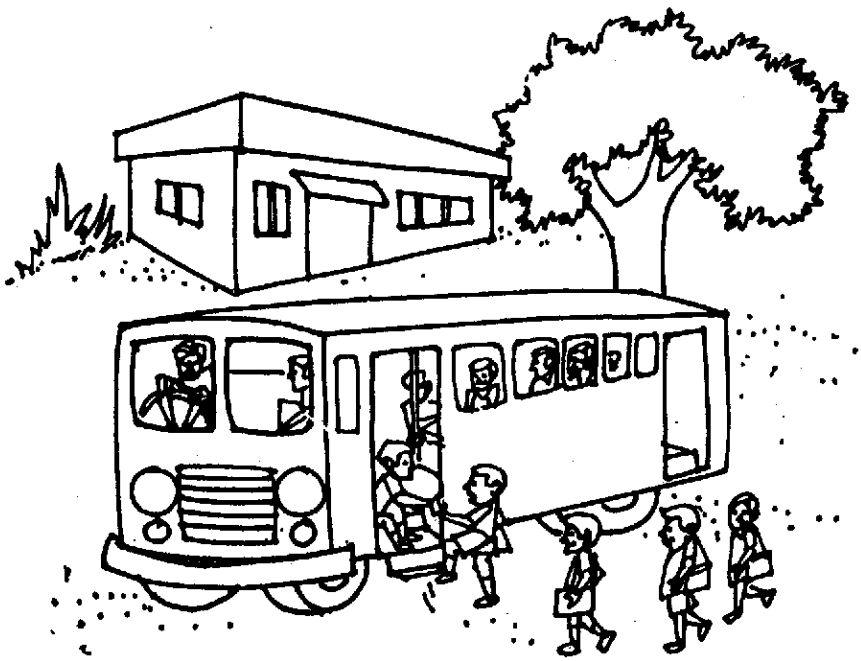

इकठ्ठे यात्रा करना - सामान्य बच्चे मानसिक विकलांग बच्चों की स्वयं यात्रा करने के कौशल में मदद करते हुए।

मानसिक रूप से विकलांग बच्चों की एकीकृत शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम की रूप रेखा*

पूर्व प्राथमिक स्तर :

पूर्व प्राथमिक स्तर पर जो काम (कौशल) सिखाए जाने हैं वे उन कामों के बहुत समान हैं जो कि सामान्य बच्चों को प्राथमिक स्तर पर सिखाए जाने होते हैं। इनमें आत्म निर्भरता, मोटर (स्वतः क्रियाएं), समाज में रहने का तरीका, भाषा और संज्ञानात्मक कौशल सम्मिलित होंगे। सामान्य बच्चों के लिए विद्यालय-पूर्व का कार्यक्रम बनाने मे ये क्षेत्र सम्मिलित रहते हैं और इसलिए यही विषय मानसिक रूप से विकलांग बच्चों के लिए भी कौशलों (कामों) की पुनरावृत्ति और सामान्यीकरण पर बल देते हुए रखे जा सकते हैं। जैसे-जैसे बच्चा बडा होता है नियमित विद्यालयों में पाठ्यक्रम मूल रूप से उन्मुख होता जाता है जिसको मानसिक रूप से विकलांग बच्चा नहीं समझ सकता। इसलिए बच्चे के स्तर के अनुऊल इसमें संशोधन जरूरी होते हैं और उसे व्यावहारिक बनाना आवश्यक होता है। निम्नलिखित सुझाव कम मानसिक विकलांग वाले बच्चों के अनुकूल एकीकृत ढांचे में शिक्षा के पाठ्यक्रम में संशोधन के लिए हैं :-

प्राथमिक स्तर :

चूंकि शिक्षा योग्य/कम मानसिक विकलांग बच्चे सामान्य बच्चों से गुणात्मक रूप से भिन्न होते हैं इनके द्वारा कक्षा में किए गए कार्य की इन बच्चों के अनुकूल समुचित रूप से संशोधित पाठ्यक्रम कार्यक्रम के अनुसार समीक्षा की जाए। शिक्षा योग्य मानसिक विकलांग बच्चों के पाठ्यक्रम को तैयार करने के लिए योजनाबद्ध दृष्टिकोण आवश्यक है जिससे कि विषयों को इन बच्चों की जरूरतों के अनुकूल बनाया जा सके। प्रत्येक बच्चे के लिए उद्देश्य बच्चे की योग्यताओं, रुझानों और आवश्यकताओं को समझने के उपरांत बनाए जाने चाहिए।

प्राथमिक समूह में वे बच्चे आते हैं जिन्होंने पूर्व प्राथमिक स्तर पर कक्षा I से V तक में प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए तैयार ली हो। चूंकि शिक्षा योग्य मानसिक विकलांग बच्चों की मानसिक योग्यता सीमित होती है इसलिए नियमित विद्यालयों में कक्षा I से V तक के पाठ्यक्रम को इन बच्चों के अनुरूप संशोधित किया जाए। इनके पाठ्यक्रम में सैद्धांतिक कार्य के स्थान पर मूलभूत व्यावहारिक शिक्षा प्रदान की जाए।

---

*1984 यूनिसेफ से आर्थिक सहायता प्राप्त परियोजना के लिए जे नारायण एवं आर सेन द्वारा तैयार किया गया।

प्राथमिक वर्ग के शिक्षायोग्य मानसिक विकलांग बच्चों के लिए सूचीबद्ध कुछ काम (कौशल) उनके लिए उनके स्तर से ऊंचे प्रतीत होते हैं। कुशल अध्यापक को चाहिए कि बच्चे को यथासंभव अधिक-से-अधिक सिखाना चाहिए और अध्यापक को सूचीबद्ध सभी का (कौशल) आवश्यक रूप से सिखाने पर जोर नहीं देना चाहिए।

कक्षा I - V पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

I. **गणित** - पुस्तक I, II एवं III

1. अंक (संख्यात्मक) - 1 - 1000 तक की संख्याओं का क्रम
   - 1 - 1000 तक की संख्याओं का संख्या मूल्य, मात्रा संकल्पनौर संख्या का स्थान
   - संख्या के सवाल
     i) जोड : तीन अंकों की संख्या के उपयोग द्वारा गुणन, हासिल लेने की अवधारणा।
     ii) घटा : तीन अंकों वाली संख्या का उपयोग करना, ऋणदान अवधारणी
     iii) गुणन : 3 अंकों की संख्या का गुणा दो अंकों वाली संख्या से - 10 तक पहाडे
     - 2, 5 और 10 छोड-छोड कर गिनना
     iv) भाग - 2 अंकों की संख्या से विभाजित होने वाली 3 अंकों की संख्याएं

   भिन्न : i) मूलभूत अवधारणा को समझना
   ii) भिन्नों का मिलान करना
   iii) रूपांतरण
   iv) साधारण जमा एवं घटा

   दशलव i) मूलभूत अवधारण को समझना
   ii) रूपांतरण
   iii) साधारण जमा और घटा

2. माप
3. वजन
4. प्रारंभिक रेखागणित
5. समय और कलेंडर
6. धन
7. 1000 तक संख्याओं के नाम-मौखिक पहचान और नाम

टिप्पणी : कक्षा में जो भी सिखाया जाए बाद में वास्तविक जीवन में उसका अनुभव कराया जाए जैसे खरीद्दारी करना, यात्रा करना या समय देखना आदि। कक्षा की पढाई के साथ-

ही-साथ सीखने के विषयों को बदला जाए।

II) भाषा :

1. पढना	-	पुस्तक I, II, III, IV पाठ्य पुस्तक का पठन - शब्द विश्लेषण और शब्दार्थ
2. समझना	-	अनुपूरक रीडरों और कहानियों की किताबों का प्रयोग करके पुस्तक III के स्तर तक
	-	मनोरंजक पुस्तकें चित्र और बच्चों की पत्रिकाओं का पठन
	-	भाषा अभ्यास पुस्तक (वर्क बुक) विपरीत शब्द लिंग, एक वचन सहित व्याकरण सिखाने के लिए।
3. लिखित अभिव्यक्ति	-	प्रत्येक दिन के क्रियाकलापों और रुझान की घटनाओं का वर्णन करना।
	-	कहानियां और लेख लिखना
	-	अधूरी कहानियों को पूरी करना
	-	चित्रों की व्याख्या और चित्र कहानियां
	-	परिवार के सदस्यों और मित्रों को पत्र लिखना
4. मौखिक अभिव्यक्ति	-	गद्य और कविताओं का सुस्वर पाठ
5. मौखिक अंग्रेजी भाषा	-	अभिव्यक्तियों को समझने और उनके अभ्यास के लिए संवाद कक्षाएं।

III पर्यावरण अध्ययन :

1. भारत और उसके राज्यों और अन्य देशों के बारे में जानकारी बढाने के लिए इतिहास और भूगोल विषय
2. सामान्य विज्ञान
3. जीव विज्ञान, स्वास्थ्य और स्वास्थ्य-विज्ञान
4. नीति शास्त्र
5. नागरिक - शास्त्र

टिप्पणी : ऊपर के सभी विषय परियोजना विषयों की तरह पढाए जाएं और कला क्राफ्ट (दस्तकारी) भाषा अभिव्यक्ति और भ्रमण को पर्यावरणीय अध्ययनों से सह-संबद्ध किया जाए तथा भारत में पर्वतों के अध्ययन में, कागज के मॉडल, चिकनी मिट्टी के मॉडल, चित्रात्मक चार्ट तथा भाषिक अभिव्यक्ति, रेखागणित और दस्तकारी सम्मिलित होंगी।

निम्नलिखित विषयों को पाठ्यक्रम में एकीकृत क्रियाकलापों के रूप में सम्मिलित किया जाए। यह बच्चों के असमान अनुपात - 1 विशेष कक्षा से 2 बच्चे सामान्य कक्षा से, की कक्षा हो सकती है।

IV. कला और दस्तकारी

1. पानी के रंगों, तेल रंगों (खडिया) क्रेयान्स या पेस्टल रंगों का उपयोग करके स्वतंत्र चित्रकारी
2. ब्लॉक छपाई, सब्जी छपाई
3. बांधनू (की रंगाई)
4. फैब्रिक पेंटिंग
5. सामान्य सीना-पिरोना
6. चिकनी मिट्टी के खिलौने बनाना
7. पेपर मैश
8. झालर बनाना - काई नौटिंग

V. गृह विज्ञान

वैकल्पिक अभिरूचि के रूप में शुरू किए जा सकते हैं।

VI. संगीत

VII. नाटक

प्रत्येक कक्षा के लिए 5 में से 2 क्रिया-कलाप चुने गए।

VIII. बागवानी

IX. पालतू जीव कार्नर

X. व्यायाम शिक्षा

1. ड्रिल एवं व्यायाम
2. योग अभ्यास
3. समूह खेल (टीम गेम)

उपस्कर

1. अनुपूरक रीडरों, कहानी की पुस्तकों, मनोरंजक चित्र पुस्तकों और बाल पत्रिकाओं से सुसज्जित पुस्तकालय
2. कला और क्राफ्ट सामग्री
3. गृह विज्ञान उपस्कार
4. बागवानी उपस्कार
5. ऑरकेस्ट्रा के लिए तालवाद्य यंत्र
6. पालतू पशु (पेट)
7. लेखन सामग्री

माध्यमिक समूह के लिए पाठ्यक्रम

माध्यमिक स्तर जो प्रशिक्षण के पूर्व व्यावसायिक स्तर के रूप में भी जाना जाता है का लक्ष्य मानसिक विकलांग बच्चे को समुचित व्यावसायिक कौशल प्राप्त करने के लिए तैयार करना है। इस स्तर पर व्यावहारिक शैक्षिक कार्य और व्यावसायिक प्रशिक्षण दोनों साथ-साथ दिए जाते हैं जिससे कि बच्चा समाज में आत्म-निर्भरता प्राप्त कर सकें। सामाजिक क्रियाकलापों के अतिरिक्त संप्रेषण कौशल और अवकाश का आनंद लेने की योग्यता भी इस कार्यक्रम के लक्ष्य होने चाहिए।

इस लिए विस्तृत पाठ्यक्रम उद्देश्यों के साथ निम्नलिखित उपाय भी किए जाएं।

1. विद्यार्थी को प्रारंभ में नियंत्रित सेटिंग में कार्य अनुभव दिया जाना चाहिए।

2. प्रत्येक विद्यार्थी की आवश्यक्ताओं और योग्यताओं के अनुसार उसे बहुत से अवसर दिए जाने चाहिए।

3. अध्यापक को समुदाय में विद्यार्थी के कार्य-नियोजन के अवसरों को ध्यान में रखना चाहिए।

माध्यमिक स्तर के लिए पाठ्यक्रम उद्देश्य निम्नलिखित है। अध्यापिका को यह ध्यान में रखना चाहिए कि प्रत्येक बच्चा एक दूसरे से भिन्न होता है और इसलिए इन उद्देश्यों का प्रयोग प्रत्येक बच्चे के लिए कार्यक्रम बनाने में मार्गदर्शन के रूप में करना होगा।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य

I. कोर विषय (आंतरिक विषय)

1. वाणिज्यिक गणित

क) धन, माप, समय आदि प्रश्नों को हल करने के लिए अंकगणितीय पद्धतियों का व्यावहारिक प्रयोग।

ख) साधारण बजट, बिल और रसीदें बनाने, लेखा रखने, खरीदारी करने और डाक टिकटों का उपयोग करने बैंकिंग और बचत की अवधारणा, और बस के समय और किरायों की जानकारी आदि जैसे सामाजिक सक्षमता के क्रियाकलाप

2. भाषा

अंग्रेजी	:	व्यवहारिक शब्दावली सूची, संकेत शब्दों वाणिज्यिक चिह्नों वर्णमाला, उत्पाद लेबलों और पारिवेशिक चिह्नों को जानना।
मौखिक	:	अनुदेशों को समझने, अपने विचारों को व्यक्त करने के और टेलिफोन पर संदेश सुनने के लिए बातचीत की अंग्रेजी
लिखित	:	हस्ताक्षर करना, व्यक्तिगत सूचना सीट लिखना
हिन्दी/मातृभाषा	:	मुक्त विद्यालय परीक्षा बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त साक्षरता स्तर तक पढाना
पढाना	:	समाचार पत्र, पत्रिकाएं और सूचना पुस्तकों से परिचय
लिखना	:	वाक्य लिखना, लेख लिखना और साधारण पत्र - व्यापारिक और सामाजिक लिखना

3. सामान्य ज्ञान और सामाजिक सक्षमता

इसमें शामिल विषय कक्षा I - V तक के पर्यावरणीय अध्ययनों का ही विस्तार होंगे। अधिकतम सम्भव सीमा तक विद्यार्थियों में आत्म निर्भरता और स्वावलम्बन के लक्ष्य के लिए अध्यात्मिक व्यावहारिक अनुभव के लिए अवसर दिए जाने चाहिए।

4. घरेलू कार्य

1. बर्तन धोना
2. कपडे धोना
3. झाडू लगाना, पोछा लगाना, छुल झाडना,
4. अपने लिए थोडा बहुत खाना बना लेना
5. किसी अवसर और रोजमार्रा के लिए बनाव श्रृंगार
6. अपने व्यक्तिगत साफाई
7. प्राथमिक चिकित्स और मूलभूत दवाईयों की जानकारी
8. छोटा मोटा सिलाई का काम।

II. वैकल्पिक विषय योग्यता और रुझान पर अधारित प्रत्येक विद्यार्थी कोई दो विषय लेगा और उनमें विशेष अध्ययन करेगा :

1. ग्रुह विज्ञान
2. उद्यान विज्ञान बागवानी
3. बुनाई
4. ललित कलाएं
5. कंगील - कण्ड संगीत /वाद्य यंत्र
6. सिलाई - कदाई, चबुनाई आदि
7. क्राफूट :ब्लाक मुद्रणा टोकरि बनाना,बढई कार्य करना, झालर बनाना, बेग और डाई,छोटी मोटी ईंजनियरिंग जैसे कार्य
8. कोई अन्यकार्य

उपस्कर : (केवल मुख्य उपस्कर सूची में दिए गए हैं)

गुह विज्ञन :

- कुकिंग रेंज
- रेफ्रीजरेटर
- मिक्सर ब्लेन्डर
- प्रेशर कुकर, क्राकरी और कलरि सहित खाना बनाने और परोसने के पर्याप्त बर्तन
- पदार्थों के लिए डिब्बे और सामान रखने के लिए अलमारियां।
- एप्रन और अन्य सम्बद्ध उपस्कर

उद्यान विज्ञान :

- बागवानी के उपस्कर

ललित कला :

- इंजन बोर्ड
- पानी और तेल रंग, ब्रश
- एप्रन
- लेखन सामग्री

संगीत :

- विद्यार्थियों की योग्यता और रूढान और अध्यापक की उपलब्धता के अनुसार विभिन्न वाद्य यंत्र

सिलाई कार्य :

- सिलाई मशीन और सभी सम्बन्धित सामग्रियां

क्राफ्ट :

- चुने गए क्राफ्ट से सम्बन्धित सभी क्राफ्ट उपस्कर।

व्यक्तिगत प्रशिक्षण कार्यक्रम

नियमपुस्तिका

राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान
मनोविकास नगर, सिकंदराबाद - 500 009.
✆ : 7751741 - 745

व्यक्तिगत प्रशिक्षण कार्यक्रम

नियमपुस्तिका

व्यक्तिगत शैक्षणिक कार्यक्रम प्रत्येक बच्चे की शैक्षणिक और प्रशिक्षण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विशेष रूप से तैयार किए जाते हैं। चूंकि दो मानसिक विकलांग बच्चों की एक जैसी योग्यताएं और आवश्यकताएं नहीं हो सकती और अधिकांश मानसिक विकलांग बच्चों को एक से अधिक विषय में यथा विशेष शिक्षा वाक् विकृति विज्ञान और श्रवण विज्ञान, मनोविज्ञान, शारीरिक चिकित्सा व्यावसायिक चिकित्सा और आयुविज्ञान सेवाओं की आवश्यकता होती है। इसलिए यह जरूरी है कि प्रत्येक बच्चे के लिए उसकी जरूरतों को ध्यान में रखते हुए और विभिन्न विषयों से समुचित भाग को लेते हुए एक विस्तृत सेवा कार्यक्रम तैयार किया जाए। इस प्रकार के व्यक्तिगत शैक्षणिक कार्यक्रम का विकास करना निदानात्मक निर्देशात्मक प्रक्रिया का एक अंगभूत अवयव है।

व्यक्तिगत प्रशिक्षण कार्यक्रम के भाग "क" और भाग "ख" दो खण्ड हैं। भाग "क" में बच्चे के विषय में सामान्य जानकारी, कार्यक्रम शुरू करने वाले व्यक्ति के बारे में जानकारी और बच्चे के लिए व्यापक लक्ष्य आते हैं। भाग "ख" में एक काम (कौशल) या व्यवहार के लिए विशिष्ट कार्यक्रम बनाना आता है।

भाग "क" को भरने के लिए मार्गनिर्देशन

1. नाम :
   बच्चों का पूरा नाम भरें और यदि कोई उसका दुलार का नाम भी हो तो उसे कोष्टक में दें।

2. जन्म तिथि (आयु) :
   (रिकार्ड के अनुसार हो)

3. लिंग :

4. पता :
   वर्तमान पता दें

5. मातृ भाषा/भाषाएं जो बोल सकता है :
   यह अनिवार्य है कि बच्चे को लगातार एक भाषा के संपर्क में रखें। इसलिए बच्चे की मातृभाषा और साथ हि साथ उसके द्वारा बोली जाने वाली अन्य भाषाओं के विवरणो को रिकार्ड करें। मातृभाषा पर गोला लगाएं :

6. पंजीकरण सं. :
   संस्थान/विधालय में बच्चें की पंजीकरण संख्या लिखें ।

7. कक्षा/रोल नं. :
   विशेष स्कूल के मामले में बच्चें का कक्षा ग्रुप और रोल नं लिखें

8. (आई टी पी) एकीकृत प्रशिक्षण कार्यक्रम लिखने की तारीख आई टी पी आमतौर पर विशेष दिन को लिखा जाता है, जब टीम की बैठक होती है और वह उसमें बच्चे के कार्यक्रम के विषय में निर्णय लेता है। ऐसी बैठक की तारीख लिखें।

9. आई टी पी संख्या :
   प्रत्येक बच्चे के एक के बाद दूसरा कई एकीकृत प्रशिक्षण कार्यक्रम होंगे। एकीकृत प्रशिक्षण कार्यक्रम - विशेष की संख्या लिखें।

10. मानसिक विकलांग बच्चे के बारे में महत्वपूर्ण सूचना। जिसमें (i) मानसिक विकलांगता का स्तर (ii) दृष्य, श्रव्य या शारीरिक विकलांगता जैसी संलग्न परिस्थितियां, मिरगी हाइपरकीनेसिस और व्यवहार संबंधी समस्याओं जैसी चिकित्सा परिस्थितियां (iii) बच्चे की परिपारिवारिक पृष्ठभूमि (iv) बच्चे की ताकत और कमजोरी (v) यदि कोई दवाई ली गई हों तो उसकी जानकारी शामिल हैं।

11. लक्ष्य :
बच्चे के मूल्यांकन के उपरांत उसके लिए निर्धारित कुल लक्ष्यों का उल्लेख करें यदि एक से अधिक लक्ष्य हो तो लक्ष्यों के अग्रता क्रम का भी उल्लेख करें।

12. उत्तरदायी कर्मचारी :
कर्मचारी का नाम लिखें, जो भी एकीकृत प्रशिक्षण कार्यक्रम को चलाने और उसका समन्वयन करने के लिए उत्तरदायी होगा उसका यहां उल्लेख किया जाना चाहिए।

भाग "ख" भरने के लिए मार्गनिर्देश

भाग "ख" में कार्यक्रम को चलाने के दिए संक्षिप्त अनुदेशों के साथ बच्चे के लिए विशिष्ट कार्यक्रम है।

13. कौशल/व्यवहार :
यहां उस कौशल निपुणता का उल्लेख किया जाता हौ जिसमें मानसिक रुप से विकलांग कोई व्यक्तिनिपुण किया जाना हो उदाहरण के लिए खाना , कपडे या लेखन कौशल तथा अन्य इसी प्रकार के कौशल। यदि उसके व्यवहार में सुधार किया जाना है तो व्यवहार का उल्लेख करें उदहरण के लिए सर मारानाा, हिलाना आखें फाड कर देखना या शरीर को आगे पीछे हिलाना आदि इसी प्रकार के अन्य व्यवहार।

14. चालू स्तर / आधार रेखा :
व्यवहार की शब्दावली में लिखें कि दिए गए कौशल या व्यवहार में मानसिक रूप से विकलांग व्यक्ति क्या करने के योग्य है उदाहरण के लिए यदि कौशल बालों में कंघी करना है तो चालू स्तर कंघी उठाना और उसे भली भांति पकडना है। कंघी को सिर पर रखना किन्तु एक दिशा में एक समान रूप से कंघी न करना। बालों में मांग नहीं निकाल सकता।

15. यदि यह व्यवहार है तो बताएं कि उसके व्यवहार को क्या चीज उत्तेजित करी है, उस समय मानसिक विकलांग व्यक्ति क्या और कितने समय के लिए करता है।

16. उद्देश्य :
व्यवहार की शब्दावली बताएं कि उद्देश्य क्या है लिखो : क) स्थिति ख) व्यवहार ग) निष्पादन का स्तर और घ) अवधि। समझाने के लिए एक उदाहरण नीचे दिया गया है : क) जब पूछा जाए ख) बच्चा (बच्चे का नाम) बोले गए फल के नाम के सही चित्र की ओर इशारा करेगा ग) 10 में से 8 बार सही रूप से जवाब देगा घ) 2 माह की अवधि में।

17. प्रक्रिया :
उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सोपान-दर-सोपान प्रक्रिया बताएं। अस्पष्ट निर्देश न दें। सभी सोपान (चरण विशिष्ट और स्पष्ट हों। प्रयुक्त किए गए संबंधितकर्ता (रिइनफोर्सर) का उल्लेख करें और इसका उपयोग कब किया गया लिखें।

18. आवश्यक सामग्री :
कौशल विशेष को विकसित करने या व्यवहार विशेष को सुधारने के लिए आवश्यक सामग्री लिखें।

19. मूल्यांकन :
जब एकीकृत प्रशिक्षण कार्यक्रम लिखा जाता हो तो इस कॉलम को खाली छोड दें। विशेष अवधि के उपरांत जब बच्चे का प्रगति या समस्याओं के लिए मूल्यांकन किया जाए तब संवीक्षण नोट करते हुए इस कॉलम को भरें। यह लिखे जाने वाले अगले (आई टी पी) एकीकृत प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए आधार स्तर या चालू स्तर तैयार करता है।

बच्चे की प्रगति के परिणाम को मात्रा में बताने के लिए निष्पादन को नीचे दिए अनुसार 1 से 7 तक कोटिबद्ध किया जा सकता है :

अंतिम तिथि से पूर्व	
आधार रेखा से नीचे	= 1
कोई प्रगति नहीं	= 2
25% प्रगति	= 3
50% प्रगति	= 4
75% प्रगति	= 5
100% प्रगति	= 6
100% प्रगति दिए गए समय से पूर्व किए तो	= 7

उचित संख्या पर गोला लगाएं। प्रगति का प्रतिशत प्राप्त करने के लिए 10 में से 8 बार उद्देश्य की तुलना का माप कर अंकों का प्रतिशत निकालें। बच्चा कितनी बार इसे कर सकता है। अंकों का प्रतिशत निकालें।

बोलने की भाषा और दैनिक जीवन की मोटर (प्रेरक) गतिविधियां और शिक्षा के क्षेत्र में कौशल का विकास इस फार्मेट में लिखा जा सकता है और साथ ही साथ ठीक किये जाने वाली व्यवहार की समस्या को भी इसमें लिखा जाए। इस लिए फार्मेट विशेष शिक्षक, वाकविकृति वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक और शारीरिक चिकित्सकों के उपयोग के लिए होता है।

20. इसमें आई समस्याएं/अभ्युक्तियां : यहां स्पष्ट रूप से उन समस्याओं को लिखें जो कि कार्यक्रम के दौरान सामने आई हो जो कि बच्चे में किसी परिस्थिति में विशेष रूप से देखी गई हों।

परिशिष्ट - 3

राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान
सिकंदराबाद
व्यक्तिगत प्रशिक्षण कार्यक्रम

भाग क

1. नाम :
2. जन्म तिथि (आयु) :
3. लिंग :
4. पता :
5. मातृ भाषा/ मानसिक विकलांग बच्चे द्वारा बोली जाने वाली भाषा (भाषाएं) :
6. पंजीकरण सं. :
7. कक्षा और रोल नं. :
8. आई टी पी (व्य.प्र.का.) भरने की तारीख :
9. आई टी पी सं. :
10. विकलांग बच्चे के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी :
11. सम्बद्ध परिस्थितियां और उपतारार्थ कहां भेजा गया, यदि केई हो। :
12. लक्ष्य :
13. कर्मचारी जिसका उत्तरदायित्व है :

राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान
सिकंदराबाद

एकीकृत प्रशाक्षण कार्यक्रम सं :

व्यक्तिगत प्रशिक्षण कार्यक्रम

कार्यक्रम बनाने की तारीख :

मूल्यांकन की तारीख :

उत्तरदायी कर्मचारी :

भाग - 'ख'

कौशल

वर्तमान स्तर
आधार रेखा

उद्देश्य

आवश्यक सामग्री

प्रक्रिया

मूल्यांकन

1 2 3 4 5 6 7

अभ्युक्तियां/सामने आई समस्याएं

कर्मचारी के हस्ताक्षर

आवधिक समीक्षा फार्म

विद्यार्थी का नाम :
आयु : समूह :

कर्मचारी/अध्यापिका का नाम :
(प्रोग्रामिंग) कार्यक्रम की तारीख :
समीक्षा की तारीख :

क्र.सं.	कौशल	विशिष्ट उद्देश्य	उपलब्धि	यदि उद्देश्य प्राप्त नहीं किया तो उसके कारण	अभ्युक्तियां

राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान
सिकंदराबाद
व्यक्तिगत प्रशिक्षण कार्यक्रम

भाग क

1.	नाम	: के.एस.बी.	6.	पंजीकरण सं.	: 25/86
2.	जन्म तिथि (आयु)	: 7.11.72	7.	कक्षा और रोल नं.	: Pr.Voc. Gr.
3.	लिंग	: महिला/बालिका	8.	आई टी पी (व्य.प्र.का.) भरने की तारीख	: 9.9.87
4.	पता	: मार्फ्त के.बि.आर म.न. 22/23 आनंद भवन कालोनी, हैदराबाद.	9.	आई टी पी सं.	: 1

5. मातृ भाषा/ मानसिक विकलांग बच्चे द्वारा बोली जाने वाली भाषा (भाषाएं) : तेलुगु, वह बोल नहीं सकती, तलुगु में दिए अनुदेशों का पालन कर सकती है, वह संकेतों से बात करती है।

10. विकलांग बच्चे के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी : वह कम मानसिक विकलांगता वाली स्तर की बच्ची है।

11. सम्बद्ध परिस्थितियां और उपतारार्थ कहां भेजा गया, यदि केई हो। : वाक क्षति

12. लक्ष्य :
    1. प्रारंभिक कार्य (मोटर स्किल) कौशल
    2. अभिमंजल भाषा कौशल
    3. समय की अवधारणा
    4. धन की अवधारणा
    5. अंकगणितीय कौशल
    6. मनोरंजन (चित्रकला)कौशल

13. कर्मचारी जिसका उत्तरदायित्व है : सिमी सक्सेना

राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान
सिकंदराबाद

एकीकृत प्रशिक्षण कार्यक्रम सं :

व्यक्तिगत प्रशिक्षण कार्यक्रम

कार्यक्रम बनाने की तारीख : 16-9-'87

मूल्यांकन की तारीख : 26.11.'87

उत्तरदायी कर्मचारी : सिमी सक्सेना

भाग - 'ख'

कौशल : अंकगणित कौशल (जोडना)

वर्तमान स्तर / आधार रेखा	भारती 10 तक संख्याएं लिख सकती है और जनसंख्यों का साधारण जोड कर सकती है जिनका जोड 5 तक हो ।

उद्देश्य

जब लिखित रूप में दिया जाए तो बच्चा अकेले अंको की संस्था का जोड करेगा । 2 महीने की अवधि में वह दस की संस्था के भीतर दो ले । इनो का जोड 80% परिशुद्धता से करेगा ।

आवश्यक सामग्री : मोती, छोटे पत्थर, बीज, जली हुई माचिस की तीलियां बटन आदि

प्रक्रिया

1. क्रेऑन, रंगीन पत्थर आदि दिखा कर बच्चे को वस्तुओं की गणना करने के लिए प्रेरित करें।
2. 10 तक की संख्याओं में से बच्चे को श्रुतलेख दें।
3. 1 से 10 तक संख्याएं लिखें जिसमें से कुछ संख्याएं छोड दें और बच्चे को संख्याएं गिनने और खाली स्थान भरने के लिए कहें । यदि जरूरी हो तो प्रेरित करें।
4. प्रत्येक अनुमान लगाने के लिए बच्चे को पुरस्कृत करें, प्रारंभिक रूप से जो लक्ष्य के निकटतम हो ।
5. मोती पत्थर जली हुई माचिस की तीलियां, बटन आदि जैसी सामग्री से 10 तक की संख्याओं का साधारण जोड करने में बच्चे की मदद करें।
6. 10 तक के भीतर की संख्याओं के जोड के एक अंक के जमा के सवाल कागज पर बी मूर्त की वस्तुओं के साथ करने के लिए दें ।
7. कागज पर बने मूर्त वस्तुओं के बिना एक अं की संख्या के जोड के सबाल दें जिनका जोड 10 से कम हो।
8. प्रत्येक सही उत्तर के लिए बच्चे को शाबासी दें।
9. आसान प्रश्न पूछे जैसे दो लाल पेंसिल और चार काली पेंसिल मिलकर कितनी होंगी 9 मूर्त वस्तुओं की सहायता से बहुत से उदाहरण दें।
10. सामान्यीकरण के लिए बच्चे से कक्षा से बाहर विभिन्न परिस्थितियों में संख्याओं को जोडने और बताने के लिए कहें । उदाहरण के लिए 2 पौधे उसकी बाई तरफ और उसकी दाई तरफ = खेल के मैदान में यदि 2 लडके और 4 लटिकियां खेल रही हैं तो कितने बच्चे खेल रहे हैं और इसी प्रकार के अन्य सवाल पूंछे ।
11. बच्चे को प्रत्येक प्रयास के लिए शाबासी देना न भूलें।

मूल्यांकन

1 2 3 4 (5) 6 7

अभ्युक्तियां/सामने आई समस्याएं

कर्मचारी के हस्ताक्षर

राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान
सिकंदराबाद

एकीकृत प्रशिक्षण कार्यक्रम सं :

व्यक्तिगत प्रशिक्षण कार्यक्रम

कार्यक्रम बनाने की तारीख : 16-9-'87

मूल्यांकन की तारीख : 25.11.'87

उत्तरधायी कर्मचारी : सिमी सक्सेना

भाग - 'ख'

कौशल : मनोरंजन (चित्रकला)

वर्तमान स्तर / आधार रेखा	भारती झोपडी, एक कम, एक सेब, एक झंडा और एक बिल्ली बना सकती है।

उद्देश्य

दो माह की अवधि में जब कहा गया तो बच्चा एक बैट और बाल। एक तितली और एक छाता 80% तक सही रूप में बना सकेगा।

आवश्यक सामग्री : सफेद कागज, पेंसिल और मिटाने वाली रबर बैट और बाल

बैट और बॉल

Fig I

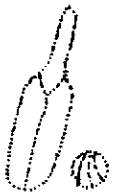

Fig II

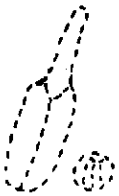

Fig III

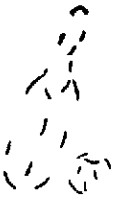

Fig IV

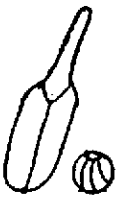

Fig V

तितली

छाता

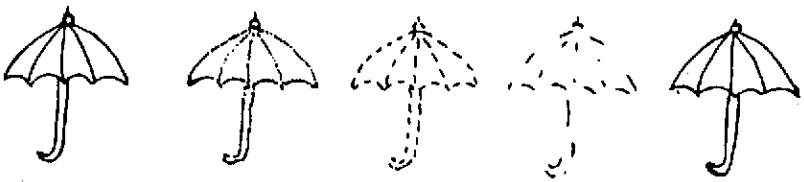

प्रक्रिया

1. बच्चे को प्रेरित करने के लिए उसे बैट और बॉल का चित्र दिखाएं और उसके बारे में बताएं।
2. बैट और बॉल का चित्र बनाएं और उसे कहें कि वह भी चित्र बनाए चित्र I
3. डॉट से (बिन्दुओं से) बैट और बॉल का चित्र बनाएं चित्र - II
4. बिन्दुओं को मिला कर बच्चे को चित्र पूरा करने के लिए कहें।
5. बिन्दुओं में दूरी बढाते हुए बैट और बॉल का चित्र बनाएं चित्र III
6. बच्चे को बिन्दुओं को मिलाते हुए चित्र पूरा करने के लिए कहें।
7. वक्र रेखाओं से बैट और बॉल का चित्र बनाएं चित्र IV
8. बच्चे को बचा हुआ चित्र पूरा करने के लिए कहें।
9. अब बच्चे को बैट और बॉल का चित्र अपने आप बनाने के लिए कहें। चित्र V
10. तितली और छाता बनाने के लिए यही प्रक्रिया अपनाई जाए।
11. बच्चे की ड्राइंग को कक्षा के नोटिस बोर्ड में लगाया जाए और बच्चे के काम की सराहना पूरी कक्षा की उपस्थिति में करें।

मूल्यांकन

1 2 3 4 (5) 6 7

अभ्युक्तियां :

टिप्पणी : एकीकृत स्थापना में बच्चे को सामान्य बच्चों के साथ आई और क्राफ्ट पीरियड में भेजा जाएगा और नियमित अध्यापिका उपरोक्त प्रक्रिया के अनुसार पढाएंगी।

कर्मचारी के हस्ताक्षर